राग-परिचय

राग-यमन

सबहि तीवर सुर जहाँ, वादी गंधार सुहाय।
अरू संवादी निषाद ते, ईमन राग कहाय॥

–रागचन्द्रिकासार

राग यमन 'कल्याण थाट' से उत्पन्न है। इसका वादी स्वर गंधार (ग) तथा संवादी स्वर निषाद (नि) है। इसमें सातों स्वर का प्रयोग होता है, इसलिए इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। इसमें मध्यम म स्वर तीव्र तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका गायन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। इस राग में जब शुद्ध मध्यम का प्रयोग किया जाता है, तब इसे 'यमन कल्याण' कहा जाता है।

आरोह : सारेग, मपं, ध, निसां।

अवरोह : सांनिध, प, मेग, रेसा।

पकड़ : नि़रेगरे, सा, पमेग, रे, सा।

आलाप : नि़रेग – रेसा, नि़ध़-नि़ध़प़-पध़नि, धनिरे-गरे- नि़रेसा – गरेसा- नि़रेसा- नि़रेग -रेग –मेग, – रेग, – नि़रेसा – सा, – नि़रेसा – निरेगमेपधनिसां – धनिरेंसा – निरेंग – रेंसा, – निधप, – रेगरेसा – धनिरेसा – गगपधप – सां – निरेंसा – निरेंगरेंसा –, निधप – मेप, निधप –, मेपधपमेगरे, गरे –, निरेसा–

राग-यमन

धन्य-धन्य ब्रज ग्राम सखी री ! रास रचत जहाँ कृष्ण मुरारी ।
धन्य वे पक्षी धन्य वे गउएं, धन्य-धन्य नर-नारी सखी री ।
परम मनोहर लीला निरखत, राधे कृष्ण की नई-नई री ।

त्रिताल-मध्यलय

स्थाई :

सां-नि ध	प प ग मे	प-ग म रे	नि रे सा -
ध ऽ न्य ध	ऽ न्य ब्र ज	ग्रा ऽ म स	खी ऽ री ऽ
0	3	x	2
नि - रे रे	ग ग मे गमे	प-ग रे	नि रे सा-
रां ऽ स र	च त ज हाँऽ	कृ ऽ एण मु	रा ऽ री ऽ
0	3	x	2

अंतरा:

प- ग ग	प - सां ध	सां - नि ध	नि रें सां-
ध ऽ न्य वे	प ऽ क्षी ऽ	ध ऽ न्य वे	ग ऊ एँ ऽ
0	3	x	2
सां-गं रें	सां नि ध प	ग मे प मे	ग रे सा-
ध ऽ न्य ध	ऽ न्य न र	ना ऽ री स	खी ऽ री ऽ
0	3	x	2
नि नि प ग	प- नि ध	सां - सां-	गं रें सां सां
प र म म	नो ऽ ह र	ली ऽ ला ऽ	नि र ख त
0	3	x	2
नि रें गं रें	सां नि ध प	ग मे प मे	ग रे सा-
रा ऽ धे ऽ	कृ ऽ एण की	न ई ऽ न	ई ऽ री ऽ
0	3	x	2

स्थाई की तानें :

1. ध ऽ न्य ध ।	ऽ न्य ब्र ज ।	निरे गमे पध निसां । निध पमे गरे सा-	
0	3	x	2
2.	।	पध निसां निध पमे । गमे पमे गरे सा-	

अंतरा की तानें

3. ध ऽ न्य वे। प ऽ क्षी ऽ — सांनि धप मेग रेसा। निरे गमे पध निसां।

4. — निनि धप मेग रेसा। निरे गमे पध निसां।

राग-विलावल

मृदु मध्यम तीवर सबहिं सुर सोहत जेहि माँहि।
ध-म वादी संवादी है, कहत विलावल ताहि॥

— रागचन्द्रिकासार

विलावल राग 'विलावल थाट' से उत्पन्न है। इसमें सातों स्वर शुद्ध लगते हैं। इसकी जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है। इसका वादी स्वर धैवत (ध) तथा संवादी स्वर गंधार (ग) है। इसका गायन समय प्रातःकाल का प्रथम प्रहर है।

आरोह : सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां।

अवरोह : सां, नि, ध, प, म, ग, रे, सा।

पकड़ : गमरे, गपध, निसां।

आलाप :

सा - निध़-, निध़ -, प़-, सा-, सारेसा-, सारेगमरे-, सा-, गरे ग- प-, धनि ध प-, मग-, मरे- गमप-, मग-, मरे-, सा-, गप, धनि - धप-, धनिसां - निध - प -, धनिधप -, ध - मग -, मरे, गमपग -, मरे - सा - , षपधनिसां - , गंमरें - गंमंपंगं - मरें - , सांनिधप - मग - मरे - गमपगमरे - सा- ।

राग - विलावल

बेगि दरस दो कृष्ण मुरारी, गोवर्धन गिरधारी।
मोर मुकुट छवि, वंशी धुन पर, मोहत ब्रज के सब नर नारी।

तीनताल (मध्यलय)

स्थाई :

सां - ध प	म ग म रे	ग म प ग	म रे सा -
बे ऽ गि द	र स दो ऽ	कृ ऽ ष्ण मु	रा ऽ री ऽ
0	3	x	2
ग - म रे	ग प नि नि	सां - रें सां	नि ध प -
गो ऽ व र	ध न गि र	धा ऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ
0	3	x	2

अंतरा :

प – प प	सां सां सां सां	सां – सां –	सां रें सां सां
मो ऽ र मु	कु ट छ वि	वं ऽ शी ऽ	धु न प र
0	3	X	2
सां – गं मं	गं रें सां नि	ध नि सां नि	ध प म ग
मो ऽ ह त	ब्र ज के ऽ	'स ब न र	ना ऽ री ऽ
0	3	X	2

स्थाई की तानें :

1. बे ऽ गि द । र स दो ऽ । सारे गप धनि सारें । सांनि धप मग रेसा ।
2. सारे गरें सांनि धनि । सांनि धप मग रेसा ।

अंतरा की तानें :

1. मो ऽ र मु । कु ट छ वि । गप धनि सारें सांनि । धप गप धनि सां
2. गप धनि सांऽ, गप । धनि सांऽ, गप ध-

राग – भूपाली

आरोही-अवरोही में सुर म-नि दीन्हे त्याग ।
ध-ग वादी-संवादि ते कह भूपाली राग ।

–रागचन्द्रिकासार

भूपाली राग 'कल्याण थाट' से उत्पन्न हुआ है । इसके आरोह तथा अवरोह में मध्यम (म) तथा निषाद (नि) स्वर वर्जित है, इसलिए इसकी जाति औड़व-औड़व मानी जाती है । इस राग का वादी स्वर ग तथा संवादी स्वर ध है । इसका गायन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है ।

आरोह : सा रे ग, प, ध, सां ।

अवरोह : सां, धप, ग, रे, सा ।

पकड़ : गरे, साध्, सारेग, पग, धपग, रे, सा ।

आलाप :

सा – , गरे सा – , साध् सा रे ग, रे ग –, पग –, धपग –, गपधसां – , सां ध प ग–, धपग, पग –, रेग – रेसा – , साध्सारेग – , पगधपग – सां – , धपग, रेंरेंसां – , धपग, गंगरेंसां – धपग – ,,गपधसारेंगरेंसां – धपग, पग – , रेग – रेसा –, साध् – , सारेग –।

राग-भूपाली

लाज बचाओ मुरारी।
तुम बिन और न दूजो कोई, बीच भंवर में आन फंसी अब।
नैया मोरी डगमग डोले, पार लगाओ शरण तिहारी।।

तीनताल-मध्यलय

स्थाई :

सां – ध प	ग रे सा –	सा ध़ सा रे	ग रे ग –
ला ऽ ज ब	चा ऽ ओ ऽ	कृ ऽ ष्ण मु	रा ऽ री ऽ
0	3	x	2
ग प ध सां	रें सां ध प	सां प ध प	ग रे सा –
तु म बि न	औ ऽ र न	दू ऽ जो ऽ	को ऽ ई ऽ
0	3	x	2

अंतरा:

ग – ग ग	प प सां ध	सां – सां सां	सां रें सां सां
बी ऽ च भं	व र में ऽ	आ ऽ न फं	सी ऽ अ ब
0	3	x	2
ध – ध –	सां – रें –	सां रें गं रें	सां रें सां ध
नै ऽ या ऽ	मो ऽ री ऽ	ऽ ग म ग	डो ऽ ले ऽ
0	3	x	2
सां – गं रें	सां रें सां–	सां सां ध प	ग रे सा –
पा ऽ र ल	गा ऽ ओ ऽ	श र ण ति	हा ऽ री ऽ
0	3	x	2

स्थाई की तानें :-

1. ला ऽ ज ब । चा ऽ ओ ऽ । सारे गप धसां पध । सांसां धप गरे सा-
2. । पधसां, पधसां, पध । सांसां धप गरे सा-

अंतरा की तानें :-

1. बी ऽ च भँ । व र में ऽ । सांसां धप गरे सा- । सारे गप धध सां-
   सारे गग रेग पप । गप धध पध सांसां

राग-भैरव

भैरव कोमल रि-म-ध सुर, तीख गंधार निषाद।
धैवत वादी सुर कष्यो, तासु ऋषभ संवाद ।।

-रागचन्द्रिकासार

राग भैरव, 'भैरव थाट' से उत्पन्न होता है। इसमें सातों स्वर लगते हैं, अतः इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। इसमें ऋषभ (रे) तथा धैवत (ध) स्वर कोमल लगते हैं तथा शेष स्वर शुद्ध लगते हैं । इसका वादी स्वर ध तथा संवादी स्वर रे है । इसका गायन समय प्रातः काल माना जाता है। कभी-कभी इस राग के अवरोह में कोमल निषाद (नि) का प्रयोग सुंदरता के लिए विवादी स्वर के नाते किया जाता है।

आरोह :- सारे, गम, पध, निसां ।

अवरोह :- सांनि, ध, पमग, रेसा ।

पकड़ :-सा, ग, मप, ध, प ।

आलाप :- सा - - , रे - रे -, सा - - , ध- - -, सा - -,
रे - सा - -, गरे - , म ग रे - -, सा - , साग -,
मप - - ध, मप - -, मगरे - -, गमपगरे-,
सा - -, निसा गम पग - - म -, ध - - निसां - -,
सारेंसांनिध, सांनिध -, निधप, मप- मग-मरे,
गमप, मग- मरे सा - - पध - निसां - -, सां, निसां-
धनिसां - रेंसां-, निसां-ध-प-, मंमरे - सां - -,
रें-सांनिसां-ध - प, मग - मप-, ध - प - मगरे - सा- ।

राग-भैरव

प्रात भयो जागो यदुराई ! मुनि-जन ध्यान करत तुम्हरो ही प्यारे कृष्ण कन्हाई ।
अन्तर : चिड़ियाँ चहक-चहक गुण गावें, पत्ते हिल-हिल शीश झुकावें ।
चलती त्रिविध समीर सुहावन, अनुपम शोभा छाई ।

(त्रिताल-मध्यलय)

स्थाई :

ग म ध ध	प - ध म	ध - पम प	म - ग -
प्रा ऽ त भ	यो ऽ जा ऽ	गो ऽ यऽ दु	रा ऽ ई ऽ
0	3	x	2

ग ग म ग	रे – ग प	म ग म ग	रे – सा –
मु नि ज न	ध्या ऽ न क	र त तु म्ह	रो ऽ ही ऽ
0	3	x	2
नि सा ग म	प ध नि सां	रें – सां नि	ध प म –
प्या ऽ रे ऽ	क ऽ एण क	न्हा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ई ऽ
0	3	x	2

अंतरा :

प घ प –	ध ध नि नि	सां सां सां सां	रें – सां –
चि ड़ि याँ ऽ	च ह क च	ह क गु ण	गा ऽ वे ऽ
0	3	x	2
ध – ध –	नि नि सां सां	रें – सां सां	नि सां ध प
प ऽ त्ते ऽ	हि ल हि ल	शी ऽ श झु	का ऽ वे ऽ
0	3	x	2
ग म प ध	सां नि ध प	म ग म ग	रे – सा सा
च ल ती ऽ	त्रि वि ध स	मी ऽ र सु	हा ऽ व न
0	3	x	2
नि सा ग म	प ध नि सां	रें – सां नि	ध प म –
अ नु प म	शो ऽ भा ऽ	छा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ई ऽ
0	3	x	2

स्थाई की तानें :

1. प्रा ऽ त भ । यो ऽ जा ऽ । निसा गम पध सां – । निध पम गरे सा–
   गम पध निसां रेंसां । निध पम गरे सा–

अंतरा की तानें

1. चि ड़ि यॉ ऽ । च ह क च । सांनि धप मग रेसा । सारे गम पध निसां
2. । धनि सारें सांनि धप । मग मप धनि सां –

राग – काफी

काफी दोनों राग थाट, गनि कोमल सब शुद्ध ।
प वादी संवादी षड़ज, सप्त स्वरों से युक्त ॥

काफी राग की उत्पति काफी थाट से होती है। इसमें गंधार (ग) और निषाद (नि) स्वर कोमल लगते हैं, तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इसका वादी स्वर 'प' तथा संवादी स्वर 'रे' माना जाता है। इसकी जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। इसका गायन समय मध्यरात्रि है। चंचल प्रकृति का राग है।

आरोह : सा रे ग॒ , म प, ध॒ नि॒ सां।

अवरोहः सां नि॒ ध, प, म ग॒, रे सा।

पकड़ : रे प, म प, ग॒ रे, ममप ऽ। सस, देरे, गग, मम, व

आलाप :

सा,- नि॒सा, - सारेग॒रे-, रेपमप - ग॒ रे -, रेग॒म --, ग॒मप-, मप --, ग॒रे --, रेग॒मग॒ - - रे नि॒ ध॒ ध॒ सा - रे म प ग॒ रे - रेमपध - -, नि॒धप -- नि॒ध - पम - पम, पधनि॒सा - परें - रें - सारेंग॒रें -, नि॒ ध म - प ध नि॒ --, धनि॒सां -- नि॒सां, नि॒धग॒रें -- सारें -- सारें -- नि॒धप -- मपग॒रे -- रेपमप -- ग॒रे -, रेध --, धनि॒धप -, मपधमप -- ग॒ रे -- सारेसा -- नि॒धसा।

राग - काफी

स्थाई : आज कैसी वृज में धूम मचाई।
पिचकारी रंग उड़त है सारी ॥

अन्तरा : वृन्दावन की सुंदर शोभा।
चकित भई सब नारी आज ॥

स्थाई :

ग॒ म ध प	ग॒ ग॒ रे -	ग॒ सारे॒ म म	प - प -
आ ज कै सी	वृ ज में ऽ	पू ऽऽ म म	चा ऽ ई ऽ
0	0	3	x
नि॒ पध॒ (सां) -	नि॒ ध म प	रे म पध॒ मप	ग॒ - रे, म
पि चऽ का ऽ	री ऽ रं ग	उ ड़ तऽ है ऽ	सा ऽ री, आ
2	0	3	x

अंतरा :

म म प ध	सां नि॒ सां -	धसां रें॒ रें सां	नि॒सां - नि॒ ध प
वृ ऽ न्दा ऽ	व न की ऽ	सु ऽऽ न्द र	शोऽ ऽऽ भा ऽ
0	3	x	2

ध ध ध ध	नि – ध प	ग – रे, म	ग म ध प
च कि त भ	ये ऽ स ब	ना ऽ री, आ	ऽ ज कै सी
0	3	x	2

स्थाई की तानें :-

1. आ ज कै सी । वृ ज में ऽ । धू ऽऽ म म । सारे गरे सासा, सारे । गम गरे सा–, सारे गम प,म गरे सा – । सारे गम पम निसां ।
2. आज कै सी । वृ ज में ऽ । धू ऽऽ म म । पप मप निध पम । गरे सा – सारे गरे गम गम पम पध । निध पम गरे सा–।

अंतरा की तानें :

1. वृ ऽ दा ऽ । व न की ऽ । सांनि सांनि धप मग । रेसा, सांनि धनि सां–
2. । निसां रेंगं रेंसां । निध पम गरे सा–

1. प्रश्न : राग से क्या समझते हैं ? राग यमन का परिचय लिखें ।
2. प्रश्न : राग यमन और विलावल में क्या अंतर है ?
3. प्रश्न : राग भूपाली किस थाट से उत्पन्न हुआ है ? इसका आरोह-अवरोह लिखें ।
4. प्रश्न : राग भैरव का पूर्ण परिचय लिखें ।
5. प्रश्न : राग की बंदिश लिखते हुए उसकी स्वरलिपि दें ।

◆◆◆

ताल प्रकरण

प्रत्येक संगीतज्ञ गायन, वादन अथवा नृत्य करते समय सर्वप्रथम एक लय निश्चित करता है। जिसमें वह अपनी कलात्मक साधना का परिचय देता है। हमारा संगीत 'देशी संगीत' है, जो जनरुचि के अनुसार बदलता रहता है। कुछ समय पूर्व जब 'ध्रुपद' गायन का प्रचार था, उस समय पखावज पर चारताल, तीव्रा, सूलताल आदि ताल बजते थे। कुछ समय के बाद ख्याल गायन, टप्पा, ठुमरी आदि का प्रचलन शुरू होने पर तबले का अस्तित्त्व आया। तब तीनताल, एकताल, दादरा, कहरवा, अद्धा, रूपक आदि तालों का जन्म हुआ। जिस पर आज भजन, ग़ज़ल, छोटा ख्याल, टप्पा, ठुमरी जैसे गायन के नये प्रकारों का प्रचार एवं प्रसार हुआ। नीचे कुछ ताल दिए गये हैं, जिनके सहारे सुगम, शास्त्रीय एवं फिल्मी गायन होते है-

तीनताल-एक परिचय

तीनताल को त्रिताल भी कहा जाता है। इसमें चार-चार मात्राओं के चार विभाग होते हैं। इसके पहली, पाँचवी एवं तेरहवीं मात्रा पर ताली एवं नवीं मात्रा पर खाली होता है। मध्यलय में ज्यादातर इसका प्रयोग होता है।

मात्रा	1 2 3 4	5 6 7 8	9 10 11 12	13 14 15 16
बोल	धा धिं धिं धा	धा धिं धिं धा	धा तिं तिं ता	धा धिं धिं धा
ताल	x	2	0	3

एकताल

एकताल बारह मात्रा का ताल है। इसमें दो-दो मात्राओं के छः विभाग होते हैं। इसके 1, 5, 9 एवं 11 वीं मात्रे पर ताली है। इसके 3 एवं 7 वीं मात्रे पर खाली है।

मात्रा	1 2	3 4	5 6	7 8	9 10	11 12
बोल	धिं धिं	धागे तिरकिट	तू ना	क ता	धागे तिरकिट	धी ना
ताल	x	0	2	0	3	4

ताल-कहरवा

कहरवा आठ मात्रा का ताल है। इसमें चार-चार मात्राओं के दो विभाग होते हैं। इसके पहली मात्रा पर ताली तथा पाँचवी मात्रा पर खाली है। इसका भी सुगम संगीत में प्रयोग होता है।

मात्रा	1 2 3 4	5 6 7 8
बोल	धा गे न ति	न क धि न
ताल	x	0

दादरा

दादरा 6 मात्रा का ताल है। इसमें तीन-तीन मात्रे के दो विभाग होते हैं। पहली पर ताली और चौथी पर खाली है। इसमें सुगम संगीत गाये जाते हैं।

मात्रा	1	2	3	4	5	6
बोल	धी	धी	ना	धा	ति	ना
ताल	x			0		

1. प्रश्न : तीन ताल का परिचय देते हुए मात्रा, बोल एवं ताल के साथ लिखें।
2. प्रश्न : तीन ताल और एकताल में क्या अंतर है ?
3. प्रश्न : मात्रा, बोल एवं ताल सहित दादरा ताल लिखें।

◆◆◆

तानसेन

चित्र : तानसेन

भारत के मध्य कालीन गायकों में तानसेन का नाम विशेष महत्त्व रखता है। अधिकांश विद्वानों के मतानुसार तानसेन का जन्म 1532 ई० में ग्वालियर से 7 मील दूर बेरहट ग्राम में हुआ था। तानसेन का असली नाम तन्ना मिश्र था और उनके पिता का नाम मकरंद पाण्डेय था। ऐसा कहा जाता है कि तानसेन का जन्म मुहम्मद गौस नामक एक फकीर के आशीर्वाद से हुआ। अपने पिता की एकमात्र संतान होने के कारण उनका पालन-पोषण बड़े प्यार-दुलार से हुआ। फलस्वरूप तन्ना मिश्र बचपन में बहुत उद्दण्ड एवं नटखट थे। प्रारंभ से ही तन्ना में दूसरों की नकल करने की अपूर्व क्षमता थी। पशु-पक्षियों तथा जानवरों की बोलियों की सच्ची नकल करने में तन्ना माहिर थे। हिंसक पशुओं की बोली की नकल करके वे लोगों को डराया करते थे।

एक समय की बात है कि वृंदावन के महान संत संगीतज्ञ स्वामी हरिदास जी अपनी शिष्य मंडली के साथ पास के जंगल से होकर जा रहे थे, तभी उन्हे शेर की दहाड़ सुनाई पड़ी। सभी शिष्यगण भयभीत हो गए परन्तु स्वामी जी तनिक भी विचलित नहीं हुए। थोड़ी ही देर के बाद तानसेन हँसते हुए सामने आए। स्वामी हरिदास जी तन्ना की प्राकृतिक प्रतिभा से अत्यधिक प्रभावित हुए और उनके पिता से तानसेन को संगीत सिखाने के लिए मांग लिया और अपने साथ वृंदावन ले गए।

तन्ना स्वामी हरिदास के साथ रहकर संगीत की शिक्षा प्राप्त करने लगे। उन्होंने लगभग 10 वर्षों तक स्वामी जी से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। इसी बीच अपने पिता की अस्वस्थता की सूचना पाकर अपने गाँव चले गए जहाँ कुछ दिनों के बाद इनके पिता का देहांत हो गया। मरने के पूर्व उनके पिता ने तानसेन को बुलाकर कहा कि तुम्हारा जन्म मुहम्मद गौस के आशीर्वाद से हुआ है अतः तुम कभी भी उनकी आज्ञा की अवहेलना नहीं करना। अतः तन्ना ग्वालियर जाकर मुहम्मद गौस के पास जाकर रहने लगे।

ग्वालियर प्रवास के काल में तानसेन ग्वालियर की विधवा महारानी मृगनयनी का गायन सुनने के लिए उसके मंदिर में जाया करते थे। वहीं तानसेन की मुलाकात रानी मृगनयनी की दासी हुसैनी से हुई। हुसैनी की सुन्दरता और उसके गायन ने तानसेन को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। रानी मृगनयनी ने हुसैनी से तानसेन की शादी करा दी। उससे चार पुत्र और एक पुत्री हुई। जिसका नाम क्रमशः सूरतसेन, शरतसेन, तरंगसेन तथा विलास खाँ एवं पुत्री का नाम सरस्वती था।

जब तानसेन की संगीत साधना पूरी हो गई तब रीवाँ नरेश रामचंद्र ने उन्हे अपने यहाँ राज गायक के रूप में नियुक्त कर लिया। चूँकि महाराज रामचंद्र और अकबर बादशाह में मित्रता थी अतः उन्होने तानसेन को उपहार स्वरूप अकबर को भेंट कर दिया। अकबर ने तानसेन को अपने दरबार के नवरत्नों में सर्वश्रेष्ठ राज गायक के पद पर स्थापित कर दिया।

चूँकि अकबर अन्य गायकों की अपेक्षा तानसेन को अधिक प्यार करते थे, अतः दरबार के अन्य गायकों को जलन होने लगी। वे लोग तानसेन को मार डालने की युक्ति निकालने लगे। सभी ने मिलकर बादशाह अकबर से प्रार्थना कि तानसेन से 'दीपक राग' सुना जाए और देखा जाए कि इस राग का कितना प्रभाव है। तानसेन ने बादशाह अकबर को इसके विनाशकारी परिणामों से अवगत कराया, किन्तु बादशाह ने एक न मानी। अतः तानसेन को दीपक राग गाना पड़ा। दीपक राग का गायन करते ही गर्मी बढ़ने लगी। चारों ओर मानो अग्नि की लपटें निकलने लगीं। श्रोतागण भाग निकले। तानसेन का शरीर भी झुलसने लगा। कहा जाता है तानसेन की पुत्री सरस्वती ने मेघ राग गाकर अपने पिता की जीवन रक्षा की। बाद में बादशाह को अपने हठ पर बड़ा पश्चात्ताप हुआ।

कभी-कभी मनुष्य को अपनी विद्या, धन और पद का अहंकार हो जाता है। इसी अहंकार में तानसेन ने ऐलान करा दिया कि इस राज्य में कोई भी गाना नहीं गाए, और जो गाएगा उसे तानसेन के साथ प्रतियोगिता करनी पड़ेगी। जो हारेगा उसे मृत्युदंड स्वीकार करना होगा। इस प्रकार तानसेन के कारण अनेक गायकों की मृत्यु हो गई। अति का अंत भी ईश्वर का विधान है। दैवयोग तानसेन के गुरूभाई बैजू-बावरा ने तानसेन की चुनौती स्वीकार की और गायन प्रतियोगिता में तानसेन को परास्त किया तथा अपने विशाल हृदय का परिचय देते हुए तानसेन को क्षमा कर दिया। उन्होने अन्य गायकों के गायन पर लगे प्रतिबंध को भी हटवा दिया।

कहा जाता है कि मुहम्मद गौस की आज्ञा से तानसेन ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। तानसेन ने दरबारी कान्हड़ा, मियाँ की तोड़ी, मिंया की सारंग, मिंया मल्हार आदि कई रागों की रचना की।

सन् 1585 में तानसेन की मृत्यु दिल्ली में हो गई। तानसेन की इच्छानुसार उन्हें उनके गुरू मुहम्मद गौस की कब्र के बगल में दफनाया गया। जहाँ प्रत्येक वर्ष संगीत समारोह होता है जिसमें देश के उच्च कोटि के कलाकार भाग लेते हैं। ◆◆◆

पं० राजकिशोर मिश्र

पं० राजकिशोर मिश्र

ध्रुपद 'ध्रुवपद' का अपभ्रंश है। जिस गायन के द्वारा हमारे पूर्वज ध्रुवपद, अमरपद या मोक्ष प्राप्त करते थे, उसे ध्रुवपद कहा जाता है। अधिकांश शास्त्रकारों ने इस शैली का जन्मदाता 15वीं सदी में ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर को माना है।

18वीं सदी में बेतिया राज में जो बिहार के चम्पारण जिले में हैं महाराजा आनन्द किशोर और महाराजा नवल किशोर के दरबार में बंगाली मल्लिक और चमारी मल्लिक ध्रुपद के दो सुविख्यात गायक थे। वैसे तो स्वयं दोनों राजा ध्रुपद के अच्छे गायक थे। राजा नवलकिशोर ने स्वयं ध्रुपद की सैकड़ों बंदिशें लिखी थीं। बेतिया घराना के बंगाली मल्लिक और चमारी मल्लिक की वंश परम्परा में ही बाँके मल्लिक, कुंज बिहारी मल्लिक और उमाचरण मल्लिक का नाम आता है। उसी काल में राज दरबार में पं० गोरख मिश्र प्रसिद्ध वीणाकार थे जो ध्रुपदशैली के वीणा वादन में अपना-विशिष्ट स्थान रखते थे।

पं० राजकिशोर मिश्र का जन्म 7 अक्टूबर 1928 को बेतिया के ही किला मुहल्ला में हुआ था जो बेतिया राजदरबार का ही एक हिस्सा था। इनके पिता का नाम पं० गोरखनाथ मिश्र मलिक था। पं० राजकिशोर मिश्र ने ध्रुपद गायन की शिक्षा अपने मामा पं० उमाचरण मल्लिक से ली थी। इसके अतिरिक्त ध्रुपद गायन की विभिन्न वाणियों की गहन अध्ययन उन्होंने अपने रिश्ते के नाना पं० कुंज बिहारी मल्लिक की छत्रछाया में किया। पं० राजकिशोर मिश्र ध्रुपद गायन का चारों वाणियों यथा खंडारबाणी, गौड़हार बाणी, डागुरबाणी और नौहार वाणी के सिद्धहस्त गायक थे। अपने गुरूजनों से प्राप्त ध्रुपद और धमार के ज्ञान को पं० राजकिशोर मिश्र ने अपनी संगीत साधना से और विकसित किय और स्वयं को बिहार के ध्रुपद गायकों के बीच स्थापित किया।

स्वतन्त्रता के बाद जब राजधरानों का विलोप होने लगा तब भी पं० राजकिशोर मिश्र "बेतिया घराना' का झंडा देश के विभिन्न संगीत समाराहों में बुलन्द करते रहे। सन् 1955 से 1965 के बीच अखिल भारतीय संगीत समाराहों में उनके ध्रुपद गायन को विशेष सम्मान मिला। पं० रामचतुर मलिक, विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, पं० ओंकार नाथ ठाकुर आदि महान गायकों के साथ उन्होंने कई संगीत समारोहों में भाग लिया। 1988 में बेतिया में ही आयोजित अखिल भारतीय ध्रुपद समारोह में जब पं० राजकिशोर मिश्र ने अपना ध्रुपद गायन

प्रस्तुत किया तो पद्मश्री रामचतुर मलिक ने उनके गायन की भूरि भूरि प्रशंसा की और गले लगा लिया।

वैसे तो पं० राजकिशोर मिश्र मूलतः ध्रुपद गायक थे। गौडहार वाणी और खंडारवाणी के विशेषज्ञ माने जाने वाले पं० राजकिशोर मिश्र जी जब नोम तोम के आलाप के साथ स्वर विस्तार करते थे तो श्रोतागण मुग्ध हो जाया करते थें। ध्रुपद के अतिरिक्त पं० राजकिशोर मिश्र धमार, टप्पा और ठुमरी का गायन भी बड़ी कुशलता से करते थे। ख्याल गायकी के क्रम में स्वर की बारिकियों को बरतना उनकी विशिष्ट कला थी। मिश्र जी सितार और हारमोनियम वादन में भी अपनी विशिष्ट पहचान रखते थे। 1965 में मोतिहारी में आयोजित अखिल भारतीय संगीत समारोह में जब पलुस्कर जी के साथ उन्होंने हारमोनियम पर संगत की तो पलुस्कर जी ने उनकी बड़ी सराहना की।

पं० राजकिशोर मिश्र की संगीत साधना और विशेषकर ध्रुपद शैली को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए संगीत नाटक अकादमी दिल्ली द्वारा पटना में 2006 में आयोजित ध्रुपद समारोह में उन्हें इक्यावन हजार रूपये की सम्मान राशि से पुरस्कृत किया गया। जनवरी 2010 में चेन्नई में आयोजित ध्रुपद समारोह में भी उन्हे सम्मानित किया गया। 2006 में उनकी संगीत साधना एवं ध्रुपद गायन के लिए चम्पारण रत्न की उपाधि दी गई। उनके प्रमुख शिष्यों में उनके पुत्र पं० अरूण कुमार मिश्र, मुहम्मद असलम चिश्ती एवं श्रीमती रुचि मिश्रा प्रमुख हैं जो अखिल भारतीय स्तर पर उनके ध्रुपद गायन की परम्परा को जीवंत बनाये हुए हैं। पं० राजकिशोर मिश्र का आशीष आजीवन सुप्रसिद्ध साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था "साहित्य कुंज" को मिलता रहा।

दिखावे एवं प्रचार से दूर एक संत की तरह संगीत साधना में आजीवन लगे राजकिशोर मिश्र का देहान्त 19 मई 2010 को हो गया। श्री मिश्र भले ही हमारे बीच नहीं हैं किन्तु ध्रुपद गायन की उनकी विशिष्ट शैली सर्वदा स्मरण योग्य है।

◆◆◆

पद्मश्री विन्ध्यवासिनी देवी

पद्मश्री विन्ध्यवासिनी देवी

बिहार में लोक संगीत की परम्परा बहुत समृद्ध रही है। पारम्परिक लोक संगीत के साथ आधुनिक लोक संगीत साधना और उसको समृद्ध बनाने में जिन कलाकारों को विशिष्ट स्थान प्राप्त है, उनमें श्रीमती विन्ध्यवासिनी देवी का नाम भी बड़े आदर के साथ लिया जाता है।

श्रीमती विन्ध्यवासिनी देवी का जन्म बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर जिले में 5 मार्च 1920 को हुआ था। बचपन से ही भोजपुरी लोकगीतों के साथ उनका लगाव था। उन्होंने संगीत की शिक्षा क्षितीश चन्द्र वर्मा से प्राप्त की। उनके पति श्री सहदेवेश्वर वर्मा ने संगीत के क्षेत्र में आगे बढ़ने में उनको पूरा सहयोग दिया। भातखंडे संगीत विद्यापीठ, लखनऊ से शास्त्रीय संगीत का पाठ्यक्रम पूर्ण करने के बाद सन् 1945 में वे आर्य कन्या विद्यालय में संगीत शिक्षिका के पद पर नियुक्त हुईं। 1949 में उन्होंने पटना में विन्ध्यकला मंदिर संगीत महाविद्यालय की स्थापना की।

सन् 1955 से 1980 तक श्रीमती विन्ध्यवासिनी देवी आकाशवाणी के पटना केन्द्र में लोक संगीत के प्रोड्यूसर के पद पर रहीं। सात वर्षों तक संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली की वे सम्मानित सदस्या रहीं। वे अनेक वर्षों तक बिहार सरकार के दृश्य तथा श्रव्य परिषद, पूर्वांचल सांस्कृतिक क्षेत्र की सक्रिय सदस्या रहीं।

देश विदेश के सांस्कृतिक आयोजनों में सफल लोकगीत गायन के लिए उन्हें अनेक प्रशस्ति पत्र और ताम्रपत्र मिले। मॉरिशस के प्रधानमंत्री ने विन्ध्यवासिनी देवी को पूरे देश की मौसी कहकर आत्मीय सम्मान दिया।

1974 में भारत सरकार ने इन्हें बिहार के लोकगीतों के संकलन और संवर्धन के लिए "पद्मश्री" से विभूषित किया। बिहार सरकार ने उन्हें बिहार रत्न की उपाधि दी। उन्होंने बारह हजार से अधिक लोकगीतों का संकलन और दो हजार लोकगीतों का गायन किया है। इन्होंने हजारों लोकगीतों की स्वर लिपियाँ तैयार किया। अनेक हिन्दी और भोजपुरी फिल्मों में उन्होंने संगीत भी दिया। बिहारी लोकगीत गायन के सिलसिले में उन्होंने कई विदेश यात्राएँ की।

उन्होंने भोजपुरी और मैथिली लोकगीतो की मंडली को लेकर अनेक बार देश के विभिन्न सांस्कृतिक केन्द्रों में अपनी सफल प्रस्तुतियाँ दी हैं। बिहार की आंचलिक फिल्मों

में चित्रगुप्त के संगीत निर्देशन में गीत और संगीत दिया। प्रथम मैथिली फिल्म कन्यादान में स्वतन्त्र रूप से संगीत निर्देशन भी किया। 1991 में इन्हें संगीत नाटक अंकादमी सम्मान दिया गया।

बिहार की पृष्ठभूमि पर बनी 'छठ मैया की महिमा' में प्रसिद्ध संगीत निर्देशक भूपेन हजारिका के निर्देशन में पार्श्व गायन किया। डागदर बाबू फिल्म के दो गीत भी गाये।

मध्यप्रदेश शासन ने इन्हे "राष्ट्रीय देवी अहिल्या पुरस्कार" से सम्मानित किया। 2005 में इन्हें संगीत नाटक अकादमी रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया। लोक संगीत की इस महान साधिका का देहान्त 18 अप्रील 2006 में हो गया। आज वे भले हमारे बीच नहीं हैं किन्तु लोक संगीत के प्रति उनका समर्पण सर्वदा याद किया जायेगा।

1. प्रश्न : तानसेन एवं पं० राजकिशोर मिश्र जी की संक्षिप्त जीवनी लिखें।
2. प्रश्न : ध्रुपद क्या है ? बेतिया घराना के प्रमुख ध्रुपद गायकों के नाम लिखें।
3. प्रश्न : श्रीमती विंध्यवासिनी देवी की जीवनी लिखें।
4. प्रश्न : श्रीमती विंध्यवासिनी देवी का लोकसंगीत को समृद्ध करने में क्या योगदान है ?

◆◆◆

भातखण्डे स्वर लिपि पद्धति एवं इस पद्धति में लिखने का ज्ञान

संसार की सम्पूर्ण भाषाएँ अपनी विशिष्ट लिपि पद्धति में निबद्ध होकर साहित्य का रूप धारण करती हैं। इसी क्रम में भारतीय संगीत साहित्य भी वर्त्तमान लिपि पद्धतियों के अन्तर्गत अपनी विशालता को प्राप्त कर विश्व की धरोहर बनती जा रही हैं।

संगीत जगत् में दो ऐसी महान विभूतियाँ हुईं जिन्होंने अपने-अपने ढंग से स्वरलिपियों की रचना की। इनमें प्रथम नाम पं० विष्णु नारायण भातखण्डे का आता है। उनके द्वारा रचित स्वरलिपि को भातखण्डे स्वरलिपि का नाम दिया गया। उत्तर भारतीय संगीत में भातखण्डे स्वर लिपि का ही प्रचलन अधिक है।

भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने की विधा

➲ **स्वर-चिह्न –**

शुद्ध स्वर	–	रे, ग, म, ध (कोई चिह्न नहीं)
कोमल स्वर	–	<u>रे</u>, <u>ग</u>, <u>ध</u> (नीचे बड़ी रेखा)
तीव्र स्वर	–	मं (ऊपर खड़ी रेखा)

➲ **सप्तक चिह्न –**

मंद्र सप्तक	–	प, ध, नी (नीचे बिन्दु)
मध्य सप्तक	–	रे, ग, म, प (कोई चिह्न नहीं)
तार सप्तक	–	गं, मं, पं, धं (ऊपर बिन्दु)

➲ **स्वर मान–**

स्वर मात्रा	–	ग, म
डेढ़ मात्रा	–	सा रे
आधी मात्रा	–	गम पध
चौथाई मात्रा	–	गमपध
एक तिहाई मात्रा	–	गमप
1/6 मात्रा	–	गमपधनीसां
दो मात्रा	–	ग–म–
अर्द्ध विराम	–	ग, मप

भातखण्डे ताल पद्धति

➲ **ताल लिपि**

सम	– x
खाली	– 0
विभाग	– 1
ताली	– ताली की संख्या जैसे 2, 3, 4

1. **प्रश्न : भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिखने की विधि का उल्लेख करें।**
2. **प्रश्न : भातखंडे तालपद्धति का विवरण दें।**

◆◆◆

हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति का संक्षिप्त इतिहास

समस्त भारतवर्ष में वर्तमान में दो संगीत पद्धतियाँ प्रचलित हैं जिन्हें हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति तथा कर्णाटक संगीत पद्धति की संज्ञा दी गई है। वर्तमान में हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति को उत्तर-भारतीय संगीत पद्धति भी कहा जाता है।

दक्षिण भारत के कर्णाटक एवं तमिलनाडु और आंध्रप्रदेश इत्यादि को छोड़कर भारत के अन्य सभी राज्यों में जो संगीत पद्धति प्रचलित है उसे हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति कहा जाता है। मुगलों के शासन काल में उत्तर भारत में प्रचलित हमारे प्राचीन और परम्परागत संगीत में व्यापक परिवर्त्तन कर दिया गया। जिसके परिणाम स्वरूप हमारी गायन शैली ध्रुपद-धमार आदि गायन शैली को पीछे ढकेलते हुए ख्याल, टप्पा, ठुमरी, गजल, दादरा आदि प्रचलित होकर प्रभावशाली बन गए। वर्तमान में हिन्दुस्तानी संगीत जिसे उत्तर-भारतीय संगीत भी कहा जाता है के अन्तर्गत उपर्युक्त गायन शैलियों के अतिरिक्त, भजन; लोकगीत आदि भी प्रचलित हैं। हिन्दुस्तानी-संगीत-पद्धति मुख्य रूप से, बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश, उड़ीसा, हरियाणा, पंजाब, गुजरात, जम्मू-कश्मीर तथा महाराष्ट्र प्रान्तों में प्रचलित है।

हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति की विशेषताएँ-हिन्दुस्तानी संगीत

(i) पद्धति में 22 श्रुतियाँ मानी गई हैं।

(ii) इस पद्धति में एक सप्तक के अन्तर्गत 12 स्वर माने गए हैं।

(iii) हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में 'म' को छोड़कर अन्य विकृत स्वर अपने स्थान से नीचे आते हैं।

(iv) इस पद्धति में प्रत्येक स्वर अपनी प्रथम श्रुति पर माना जाता है।

(v) हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में शुद्ध मेल (थाट) बिलावल माना गया है।

(vi) इस पद्धति में स्वरों का श्रुत्यांतर 4, 3, 2, 4, 4, 3, 2 माना गया है।

श्रुति विभाजन के क्रम में हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में षड़ज (सा) को प्रथम श्रुति मानकर स्वर विभाजन किया गया है।

1. प्रश्न : हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति की क्या विशेषताएँ है ?
2. प्रश्न : हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति का प्रचलन देश के किन-किन राज्यों में है ?

◆◆◆

जन-गण-मन

जन-गण-मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
पंजाब, सिंध, गुजरात मराठा
द्राविड़, उत्कल बंग
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा
उच्छल जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशीष मागे
गाहे तव जय गाथा
जन-गण-मंगल दायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
जय हे, जय हे, जय हे
जय-जय-जय-जय हे।

रचयिता–गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर

◆◆◆

वन्दे-मातरम्

वन्दे मातरम्,
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य-श्यामलां, मातरम्,
वन्दे मातरम्,
शुभ्र-ज्योत्सना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीं, सुमधुरभाषिणीम्''
सुखदां, वरदां, मातरम्
वन्दे-मातरम्

रचयिता–वंकिमचन्द्र .चट्टोपाध्याय

◆◆◆

सर्वधर्म सम्भाव प्रार्थना

तू ही राम है तू रहिम है–

तू ही राम है, तू रहीम है
तू करीम कृष्ण-खुदा हुआ
तू ही वाहे गुरु तू इशु मसीह
हर नाम में तू समा रहा,
तू ही राम...., ...

तेरी जात-पाक कुरान में
तेरा दर्श वेद-पुराण में
गुरु ग्रंथ जी के बखान में
तू प्रकाश अपना दिखा रहा
तू ही राम.....

अरदास है कहीं कीर्तन
कहीं रामधुन कहीं आवाह्न
विधि-वेद का है ये रचन
तेरा भक्त तुझको बुला रहा,
तू ही राम.....

◆◆◆

हम होंगे कामयाब

हम होंगे कामयाब
ओ हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास
हम होंगे कामयाब एक दिन.....

हम चलेंगे साथ-साथ
डाले हाथों में हाथ,
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन
ओहो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास

नहीं डर किसी का आज - 3, नहीं भय किसी का आज
नहीं डर किसी का आज के दिन, ओ हो मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास, नहीं डर किसी का आज के दिन
हम होंगे.....

होगी शांति चारों ओर - 3
एक दिन.....ओ हो मन में है विश्वास
पूरा है विश्वास होगी शांति चारों ओर एक दिन.....

प्रश्न

स्मरण से राष्ट्रगान (जन गण मन....) अथवा राष्ट्रगीत (वंदे मातरम्) को लिखें।
राष्ट्रगान एवं राष्ट्रगीत के रचनाकार कौन है ?

◆◆◆